Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तर प्रदेश

खंड शिक्षा अधिकारी (BEO)

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भाग - 7

सामान्य हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	संधि	1
2	समास	13
3	वाक्य एवं वाक्य प्रकार	23
4	वाक्य रचना	28
5	वर्तनी शुद्धि	32
6	वाक्य शुद्धि	37
7	पत्र लेखन	41
8	निबंध लेखन	58
9	संक्षेपण	91
10	पल्लवन	93
11	अपठित गद्यांश	97
12	अनुवाद	102
13	मुहावरे	108
14	लोकोक्तियाँ	116
15	पर्यायवाची शब्द	123
16	वाक्य के एक शब्द	128
17	विलोम शब्द	136

1
CHAPTER

संधि

- संधि शब्द का अर्थ है - **वर्ण विकार।**
- दो वर्णों या ध्वनियों के परस्पर व्यवधान रहित संयोग से होने वाले परिवर्तन (विकार) को **संधि** कहते हैं।

उदाहरण के रूप मे → विद्यालय = विद्या + आलय

- अर्थात **विद्या** शब्द का अंतिम वर्ण मे **"आ"** और **आलय** का प्रारम्भिक वर्ण **"आ"** के समीप आने पर दो दीर्घ वर्णों के स्थान पर एक **"आ"** वर्ण रूप मे **एकादेश** हो जाता हैं ।
- **श्री किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार**, "जब दो या अधिक वर्ण पास-पास आते हैं तो कभी-कभी उनमें रूपांतर हो जाता है। इसी रूपांतर को संधि कहते हैं।"
- दूसरी तरफ, इस परिवर्तन से इन ध्वनियों या वर्णों को पुनः अपने मूल रूप में लाने की प्रक्रिया **संधि-विच्छेद** कहलाती है।
- **उदाहरण स्वरूप -**
  - ✓ **संधि :** महा + ईश = महेश [आ + ई =ए (यही परिवर्तन/विकार है)]
  - ✓ **संधि-विच्छेद:** महेश = महा + ईश (पुनः अपने मूल रूप में)

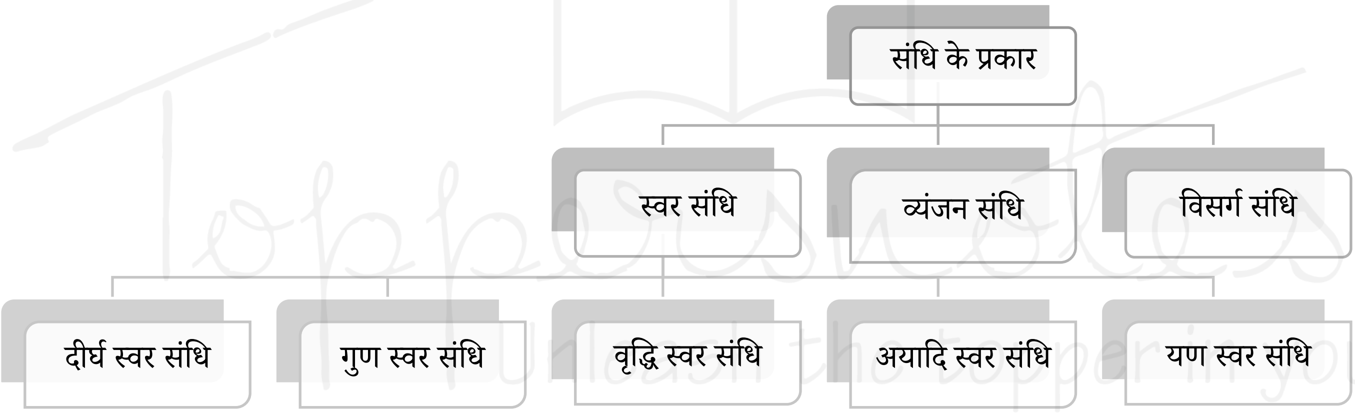

स्वर संधि

- दो **स्वरों के मेल** से उत्पन्न होने वाले विकार या परिवर्तन को **स्वर संधि** कहते है।

उदाहरण के लिए - भाव + अर्थ = भावार्थ

- यहाँ 'भाव' शब्द का अंतिम स्वर 'अ' एवं 'अर्थ' शब्द का पहला स्वर 'अ', दोनों स्वरों के) से 'आ' स्वर की उत्पत्ति हुई, जिससे 'भावार्थ' शब्द का निर्माण हुआ। स्वरों के ऐसे मेल को स्वर-संधि कहते है।

दीर्घ स्वर संधि :

- दो समान स्वर मिलकर जब दीर्घ स्वर में बदल जाते है तो वहाँ **दीर्घ स्वर संधि** होती है।

  या

- यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमश: आ, ई, ऊ तथा ॠ हो जाते हैं।

उदाहरण :

स्वर	उदाहरण शब्द	संधि से बना नया शब्द
अ + अ = आ	दैत्य + अरि अन्य + अन्य मध्य+अवधि दिवस + अवसान दीप + अवली समान + अधिकार कल्प + अंत स + अवधान मार्त + अण्ड दिन + अन्त सुख + अन्त अन्न + अभाव सह + अनुभूति पर + अधीन उत्तर + अयन अधिक + अंश पाठ + अंतर	दैत्यारी अन्यान्य मध्यावधि दिवसावसान दीपावली समानाधिकार कल्पान्त सावधान मार्तण्ड दिनान्त सुखान्त अन्नाभाव सहानुभूति पराधीन उत्तरायण अधिकांश पाठान्तर
अ + आ = आ	देव + आनन्द पुस्तक + आलय भोजन + आलय देव + आलय न्याय + आलय पत्र + आलय मरण + आसन्न हिम + आलय शिव + आलय	देवानन्द पुस्तकालय भोजनालय देवालय न्यायालय पत्रालय मरणासन्न हिमालय शिवालय
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी तथा+अपि महा + अर्णव परीक्षा + अर्थी यथा + अर्थ विद्या + अभ्यास आज्ञा + अनुसार तथा + अस्तु	विद्यार्थी तथापि महार्णव परीक्षार्थी यथार्थ विद्याभ्यास आज्ञानुसार तथास्तु
आ + आ = आ	विद्या + आलय श्रद्धा + आनंद	विद्यालय श्रद्धानंद
इ + इ = ई	कवि + इन्द्र रवि + इंद्र अभि + इष्ट अति + इव	कवीन्द्र रवीन्द्र अभीष्ट अतीव
ई + इ = ई	मही + इन्द्र शची + इंद्र फणी+ इन्द्र सुधी + इन्द्र देवी + इच्छा	महीन्द्र शचींद्र फणीन्द्र सुधीन्द्र देवीच्छा
इ + ई = ई	गिरि + ईश कपि + ईश परि + ईक्षा हरि + ईश मही + ईश	गिरीश कपीश परीक्षा हरीश महीश
ई + ई = ई	रजनी + ईश पृथ्वी + ईश फणी + ईश्वर नारी + ईश्वर	रजनीश पृथ्वीश फणीश्वर नारीश्वर
उ + उ = ऊ	भानु + उदय गुरु + उपदेश सु + उक्ति	भानूदय गुरूपदेश सूक्ति
उ + ऊ = ऊ	वसु + उत्सव अम्बु + ऊर्मि धातु + ऊष्मा	वसूत्सव अंबूर्मि धातूष्मा
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्जा वधू + ऊर्मि भू + ऊर्ध्व	भूर्जा वधूर्मि भूर्ध्व
ऋ + ऋ = ऋ	पितृ + ऋण	पितृण

गुण संधि :

- इस संधि के तहत यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' की ध्वनि आती है तो वह 'ए' में बदल जाती है, 'उ' या 'ऊ' की ध्वनि आती है तो वह 'ओ' में बदल जाती है तथा 'ऋ' की ध्वनि आती है तो वह 'अर्' में बदल जाती है।
- अ, ए एवं ओ वर्णों को 'गुण' वर्ण कहा जाता है।

उदाहरण :

स्वर	शब्द	नया शब्द (संधि)
अ + इ = ए	देव + इन्द्र	देवेन्द्र
अ + ई = ए	प्र + इषिति	प्रेषिति
आ + इ = ए	प्र + इत	प्रेत
आ + ई = ए	शुभ + इच्छा	शुभेच्छा
	राम + इन्द्र	रमेन्द्र
	गण + ईश	गणेश
	खग + ईश	खगेश
	यथा + इष्ट	यथेष्ट
	राजा + इन्द्र	राजेन्द्र
	रमा + ईश	रमेश
	नर+ इन्द्र	नरेंद्र
	सुर + इंद्र'	सुरेंद्र
	उप + इन्द्र	उपेन्द्र
	जित + इन्द्रिय	जितेन्द्रिय
	परम + ईश्वर	परमेश्वर
	महा + ईश्वर	महेश्वर
	देव + ईश	देवेश
	महा + इन्द्र	महेन्द्र
	नर + ईश	नरेश
	नाग + ईश	नागेश
	भुवन + ईश्वर	भुवनेश्वर
	सुर+ ईश	सुरेश
	भारत + इंदु	भारतेंदु
	हृषीक + ईश	हृषीकेश
अ + उ = ओ	वीर + उद्धत	वीरोद्धत
	प्र + उत्साहन	प्रोत्साहन
	पुष्प + उद्यान	पुष्पोद्यान
	प्राप्त + उदक	प्राप्तोदक
	वन + उत्सव	वनोत्सव
	हिम + उपल	हिमोपल
	पूर्ण + उपमा	पूर्णोपमा
	सर्व + उदय	सर्वोदय
	सांग + उपांग	सांगोपांग
	दीप + उत्सव	दीपोत्सव
	सूर्य + उदय	सूर्योदय
	सर्व + उत्तम	सर्वोत्तम
	कर्ण + उद्धार	कर्णोध्दार
	चन्द्र + उदय	चन्द्रोदय
	पर + उपकार	परोपकार
अ + ऊ = ओ	जल + ऊर्मि	जलोर्मि
	प्र + ऊढ़	प्रौढ़
	नव + ऊढ़ा	नवोढ़ा
	अक्ष + ऊहिनी	अक्षौहिणी
आ + उ = ओ	महा + उत्सव	महोत्सव
	महा + उदधि	महोदधि
	यथा + उचित	यथोचित
	महा + उदय	महोदय
	महा + उर्मि	महोर्मि
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि	गंगोर्मि
	यमुना+ऊर्मि	यमुनोर्मि
अ + ऋ = अर्	कपट + ऋषि	कपटर्षि
	अधम + ऋण	अधर्मण
	देव + ऋषि	देवर्षि'
	राज + ऋषि	राजर्षि
	सप्त + ऋषि	सप्तर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि	महर्षि

वृद्धि संधि :

- इस संधि के तहत यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' की ध्वनि आती है तो वह 'ऐ' में और यदि 'ओ' या 'औ' की ध्वनि आती है तो वह 'औ' में बदल जाती है।
- आ, ऐ एवं औ वर्णों को 'वृद्धि' वर्ण कहते हैं।

उदाहरण :

संधि	शब्द	नया शब्द (संधि फल)
अ + ए = ऐ	एक + एक	एकैक
	जीव + एषणा	जीवैषणा
अ + ऐ = ऐ	परम + ऐश्वर्य	परमैश्वर्य
	भाव + ऐक्य	भावैक्य
	मत + ऐक्य	मतैक्य
	तत्र + एव	तत्रैव
	विश्व+ऐक्य	विश्वैक्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव	सदैव
	तथा + एव	तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य	महैश्वर्य
	विद्या + ऐश्वर्य	विद्यैश्वर्य

अ + ओ = औ	परम + ओज	परमौज
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी महा + औदार्य	महौजस्वी महौदार्य
अ + औ = औ	वन + औषधि	वनौषधि
आ + औ = औ	महा + औषध	महौषध

यण् संधि :

- इस संधि के अंतर्गत यदि 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो वे निम्नानुसार परिवर्तित हो जाते है -
  - ✓ इ / ई → य् ,
  - ✓ उ / ऊ → व् ,
  - ✓ ऋ → र्।
- साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य्, व्, र् में लग जाती है।
- वि + अव + हार = व्यवहार (इसमें 'अव' मूल शब्द 'वि' उपसर्ग तथा 'हार' प्रत्यय है।)

उदाहरण :

संधि का नियम	**संधि-विच्छेद (मूल शब्द)**	**नया शब्द (संधि-फल)**
इ + अ = 'य्'	अति + अधिक यदि + अपि प्रति+अय प्रति + अंग गति + अवरोध अभि + अर्थी वि + अभिचार रीति + अनुसार इति + अर्थ वि + अर्थ अति + अल्प अनु + अय	अत्यधिक यद्यपि प्रत्यय प्रत्यंग गत्यवरोध अभ्यर्थी व्यभिचार रीत्यनुसार इत्यर्थ व्यर्थ अत्यल्प अन्वय
इ + आ = य	इति + आदि वि + आकुल अति + आवश्यक प्रति + आरोपण वि + आयाम अति + आचार	इत्यादि व्याकुल अत्यावश्यक प्रत्यारोपण व्यायाम अत्याचार
ई + अ = 'य्'	नदी + अर्पण देवी + अर्पण देवी + अर्थ	नद्यर्पण देव्यर्पण देव्यर्थ
ई + आ = य	नदी + आगम देवी + आगम सरस्वती + आराधन	नद्यागम देव्यागम सरस्वत्याराधन
इ + उ = यु	अति + उत्तम प्रति + उपकार प्रति + उत्तर अति + उक्ति अति + उत्तम अभि + उदय उपरि + उक्त	अत्युत्तम प्रत्युपकार प्रत्युत्तर अत्युक्ति अत्युत्तम अभ्युदय उपर्युक्त'
ई + उ = यु	सखी + उचित स्त्री + उपयोगी	सख्युचित स्त्र्युपयोगी
इ + ऊ = यू	अति + ऊष्म नि + ऊन	अत्यूष्म न्यून
ई + ऊ= यू	नदी + ऊर्मि	नद्यूर्मि
इ + ए = ये	प्रति + एक देवी + एकता	प्रत्येक देव्येकता
इ + ऐ = यै	देवी + ऐश्वर्य	देव्यैश्वर्य
इ + ओ = यो	दधि + ओदन	दध्योदन
उ + अ = व्	सु + अच्छ सु + अल्प मधु + अरि	स्वच्छ स्वल्प मध्वरि
उ + आ = वा	सु + आगत गुरु + आश्रम	स्वागत गुर्वाश्रम
ऊ + आ = वा	भू + आदि वधू + आगमन	भ्वादि वध्वागमन
उ + ए = वे	अनु + एषण	अन्वेषण

उ + इ = वि	अनु + इति धातु + इक	अन्विति धात्विक
ऊ + इ = वि	वधू + इच्छा	वध्विच्छा
ऋ + अ = र्	पितृ + अनुमति	पित्रनुमति
ऋ + आ = र	पितृ + आज्ञा मातृ + आज्ञा मातृ + आनन्द पितृ + आदेश	पित्राज्ञा मात्राज्ञा मात्रानन्द पित्रादेश
ऋ + इ = रि	मातृ + इच्छा	मात्रिच्छा
ऋ + उ= रु	भ्रातृ + उपकार	भ्रात्रुपकार

अयादि संधि :

➢ यदि 'ए' या 'ऐ' और 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो निम्न रूप से विकार देखने को मिलता हैं।
  - ✓ ए → अय् में,
  - ✓ ऐ → आय् में ,
  - ✓ ओ → अव्
  - ✓ औ → आव्

उदाहरण :

संधि का नियम	संधि-विच्छेद (मूल शब्द)	नया शब्द (संधि-फल)
ए + अ = अय	ने + अन शे + अन चे + अन	नयन शयन चयन
ऐ + अ = आय	नै + अक गै + अक गै + अन	नायक गायक गायन
ओ + अ = अव	पो + अन	पवन
ओ + इ = अवि	पो + इत्र	पवित्र
औ + अ = आव	पौ + अक श्रौ + अन श्रौ + अक	पावक श्रावण श्रावक
औ + ई = आवि	नौ + इक	नाविक
औ + उ = आवु	भौ + उक	भावुक

व्यंजन संधि

➢ किसी व्यंजन का किसी अन्य व्यंजन या स्वर के साथ मेल होने पर ध्वनियों में उत्पन्न होने वाले विकार को ही व्यंजन संधि कहते है।

➢ व्यंजन संधि का अन्य नाम (संस्कृत मे) - **हल् संधि**

व्यंजन संधि के कुछ नियम

संधि का नियम	नियम	संधि-विच्छेद	सधि-फल
1. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात 'ग', 'ज', 'ड', 'द', 'ब', हो जाता है।	क् → ग्, च् → ज्, ट् → ड्, त् → द्, प् → ब्	वाक् + ईश वाक् + ईश्वर दिक् + गज दिक् + दर्शन दिक् + अंबर वाक् + दान सत् + वाणी अच् + अंत अप् + इंधन तत् + रूप जगत् + आनंद	वागीश वागीश्वर दिग्गज दिग्दर्शन दिगंबर वाग्दान सद्वाणी अजंत अबिंधन तद्रूप जगदानंद

		सत् + भावना षट् + आनन सत् + गति उत् + ज्वल तत् + अनन्तर उत् + गम उत् + योग जगत् + ईश षट्+रिपु कृत् + अंत जगत् + अंबा सत् + धर्म सुप् + अन्त उत् + विग्न सत् + आनन्द अप् + धि दिक् + अन्त तत् + अनुकूल	सद्भावना षडानन सद्गति उज्ज्वल तदनन्तर उद्गम उद्योग जगदीश षड्रिपु कृदन्त जगदम्बा सद्धर्म सुबंत उद्विग्न सदानन्द अब्धि दिगन्त तदनुकूल
2. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद 'न' या 'म' आए तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' अपने वर्ग के पंचम वर्ण अर्थात् ङ्, ञ, ण, न, म् में बदल जाते हैं।	क्→ङ्, च्→ञ्, ट्→ण्, त्→न्, प्→म्	वाक् + मय षट् + मास जगत् + नाथ अप् + मय तत् + मय सत् + मार्ग उत् + नति उत् + नयन दिक् + नाग षट् + मुख सत् + निवेश दिक् + मण्डल विव्दत् + मूर्ति	वाङ्मय षण्मास जगन्नाथ अम्मय तन्मय सन्मार्ग उन्नति उन्नयन दिङ्नाग षण्मुख सन्निवेश दिङ्मण्डल विव्दन्मूर्ति
3. यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन आए तो 'म' जुड़ने वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण या अनुस्वार हो जाता है। (अपवाद- सम् + कृत = संस्कृत सम् + कृति = संस्कृति)	म् → अनुस्वार/पंचम	अहम + कार किम् + चित् सम् + गम सम् + तोष सम् + चय सम् + मान किम् + कर किम् + नर	अहंकार किंचित् संगम संतोष संचय सम्मान किंकर किन्नर

		सम् + कल्प सम् + पूर्ण पम् + चम अकिम् + चन दिवम् + गत परम्+ तु सम् + तप्त सम् + मति अवश्यम् + भावी सम् + शय सम् + विधान	संकल्प संपूर्ण पंचम अकिञ्चन दिवङ्गत परन्तु संतप्त सम्मति अवश्यम्भावी संशय संविधान
4. यदि म् के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से किसी भी वर्ण का मेल हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार ही लगेगा।	म् → (अनुस्वार)	सम् + योग सम् + रचना सम् + वाद सम् + सार सम् + रक्षण सम् + हार	संयोग संरचना संवाद संसार संरक्षण संहार
5. यदि त् या द् के बाद 'ल','ट', 'ड' रहे तो 'त्' या 'द्' क्रमशः 'ल्', 'ट्', 'ड्' में बदल जाता है।	**त्/द् + ल → ल्**	उत् + लास उद् + लेख तत् + लीन उद् + लाघ उत् + लंघन तडित् + लेखा तत् + टीका	उल्लास उल्लेख तल्लीन उल्लाघ उल्लंघन तडिल्लेखा तट्टीका
6. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ज'/'झ' या 'म' हो तो 'त्' या 'द्'क्रमशः 'ज्' या 'न्', में बदल जाता है।	**त्/द् → ज्**	सत् + जन उद् + झटिका विपत् + जाल जगत् + जीवन शरद् + माला उपनिषद् + मीमांसा जगत् + जननी	सज्जन उज्झटिका विपज्जाल जगज्जीवन शरन्माला उपनिषन्मीमांसा जगज्जननी
7. यदि 'त्' या 'द्' वर्ण के बाद 'श' वर्ण आता है, तो 'त्' या 'द्' का परिवर्तन 'च्' में हो जाता है और 'श' का परिवर्तन 'छ' में हो जाता है।	**त्/द् →च्** **श → छ्**	उद् + श्वास उद् + शिष्ट सत् + शास्त्र मृद + शकटिक विद्युत् + शक्ति तत् + शंकर	उच्छ्वास उच्छिष्ट सच्छास्त्र मृच्छकटिक विद्युच्छक्ति तच्छंकर

8. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'च' या 'छ' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' हो जाता है।	**त्/द् →च्**	उत् + चारण सत् + चरित्र वृहत् + चयन उत् + छिन्न सत् + चित सत् + चित् + आनन्द	उच्चारण सच्चरित्र वृहच्चयन उच्छिन्न सच्चित सच्चिदानन्द (नियम=1+8)
9. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' एवं 'द्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है।	**त्/द् → द्, ह → ध**	तत् + हित उत् + हार पद् + हति	तद्धित उद्धार पद्धति
10. जब पहले पद के अंत में स्वर हो और आगे के पद का पहला वर्ण 'छ' हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।	**छ → च्छ**	अनु + छेद परि + छेद आ + छादन संधि + छेद स्व + छंद वृक्ष + छाया श्री + छाया प्र + छन्न लक्ष्मी + छाया मातृ + छाया	अनुच्छेद परिच्छेद आच्छादन संधिच्छेद स्वच्छंद वृक्षच्छाया श्रीच्छाया प्रच्छन्न लक्ष्मीच्छाया मातृच्छाया
11. यदि किसी शब्द के अंत में 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए एवं दूसरे शब्द के आरंभ में 'स' हो तो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है।	**स → ष**	अभि + सेक वि + सम नि + सिद्ध सु + सुप्ति वि + साद सु + स्मिता	अभिषेक विषम निषिद्ध सुषुप्ति विषाद सुष्मिता
12. ऋ, र, ष के बाद जब कोई स्वर, कोई 'क' वर्गीय या 'प' वर्गीय वर्ण, अनुस्वार अथवा य, व, ह में से कोई वर्ण आए तो अंत में आने वाला 'न', 'ण' हो जाता है।	**न → ण**	भर् + अन भूष् + अन राम + अयन प्र + मान	भरण भूषण रामायण प्रमाण
13. यदि 'अहन्' शब्द के बाद 'र' आए तो 'अहन्' का 'अहो' हो जाता है	**अहन् + र = अहो**	अहन् + रात्रि अहन् + रूप	अहोरात्र अहोरूप
14. यदि 'द्' के बाद 'क-ख', 'त-थ', 'प-फ', 'श-ष' आए तो 'द्' अपने ही वर्ग के प्रथम व्यंजन 'त्' में बदल जाता है	**द् → त्**	तद् + पर सद् + कार उद् + साह	तत्पर सत्कार उत्साह

15. 'इ/उ' के बाद 'स्त', 'स्थ', 'स्न' आए तो उनका क्रमशः 'ष्ट', 'ष्ठ', 'ष्ण'हो जाता है	**स → ष**	नै + स्थिक नि + सन्न	नैष्ठिक निषन्न
16. यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' आए तो 'न' 'ण' में बदल जाता है	**न → ण**	परि + नय परि + नाम	परिणय परिणाम
17. यदि प्रथम वर्ण + घोष वर्ण (पंचम वर्ण को छोड़कर) आये तो प्रथम वर्ण अपने वर्ग के तृतीय वर्ण में रूपांतरित हो जाएगा		ऋक् + वेद'	ऋग्वेद
	त् + आ = द्	सत् + आनन्द	सदानंद
18. व्यंजन संधि में यदि त् \+ ट आये तो त् का ट्, त् \+ ड आये तो त् का ड् तथा त् \+ ल् आये तो त् का ल् हो जाएगा।		उत् + डयन	उड्डयन

विसर्ग संधि

➢ जब विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होता है तो इससे शब्द में विकार या परिवर्तन हो जाता है जिसे **'विसर्ग संधि'** कहते हैं।

विसर्ग संधि के नियम			
संधि का नियम	**नियम**	**संधि-विच्छेद**	**संधि-फल**
1. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में 'अ' हो तो दोनों का विकार 'ओ' हो जाता है।	**अः + अ = ओ**	मनः + अनुकूल यशः + अभिलाषा अन्यः + अन्य मन: + अनुसार	मनोनुकूल यशोभिलाषा अन्योन्य मनोनुसार
2. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद वाले शब्द का पहला अक्षर 'अ' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।	**अः + अ = अ (विसर्ग लोप)**	अतः + एव यशः + इच्छा	अतएव यशइच्छा
3. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में किसी वर्ग का तृतीय/चतुर्थ वर्ण अथवा म, य, र, ल, व, ह आए तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है।	**अः + (ग, घ, द, ध, य, र, ल, व ...) = ओ**	मन:+हर तपः + वन तमः + गुण पयः + द सरः + वर वय: + वृद्ध वयो: + वेग तेजः + बल यशः + धरा मनः + रथ	मनोहर तपोवन तमोगुण पयोद सरोवर वयोवृद्ध वयोवेग तेजोबल यशोधरा मनोरथ

		मनः + रंजन यश: + दा मन:+ दशा रज: + दर्शन यशः + वर्मन नभः + मण्डल अन्ततः + गत्वा सरः + ज यश: + भूमि शिरः +भाग तप: + भूमि मन: + विकार शिर: + रेखा तिरः + धान रजः + भव	मनोरंजन यशोदा मनोदशा रजोदर्शन यशोवर्मन नभोमण्डल अंततोगत्वा सरोज यशोभूमि शिरोभाग तपोभूमि मनोविकार शिरोरेखा तिरोधान रजोभव
4. यदि विसर्ग के बाद अ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर अथवा किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या 'य' 'ल' 'व' 'ह' हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है।	**विसर्ग** → **र्**	अंत: + ध्यान दुः + उपयोग आयुः + वेद ज्योतिः + मय चतुः + दिशि पुन: + जन्म नि: + आहार निः + जल निः + धन दु: + आत्मा निः + लोभ आशी: + वाद आशी: + वचन दुः + गुण दुः + गंध दु: + ऊह निः + आशा दुः + दशा नि: + भय नि: + उपाय नि: + गुण नि: + मल पुनः + उक्ति बहिः + एकता	अंतर्ध्यान दुरुपयोग आयुर्वेद ज्योतिर्मय चतुर्दिश पुनर्जन्म निराहार निर्जल निर्धन दुरात्मा निर्लोभ आशीर्वाद आशीर्वचन दुर्गुण दुर्गंध दुरूह निराशा दुर्दशा निर्भय निरुपाय निर्गुण निर्मल पुनरुक्ति बहिरेकता

5. यदि विसर्ग के बाद 'च'/'छ' या तालव्य 'श' हो तो विसर्ग 'श्' में बदल जाता है।	**विसर्ग → श्**	पुनः + च तपः + चर्या यशः + शरीर मन: + चिकित्सा निः + चय नि: + छल निः + चल हरिः + चन्द्र	पुनश्च तपश्चर्या यशश्शरीर मनश्चिकित्सा निश्चय निश्छल निश्चल हरिश्चंद्र
6. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'त' या दंत्य 'स' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है।	**विसर्ग → स्**	पर: + पर नमः + ते मनः + ताप दु: + तर चन्द्र: + तम	परस्पर नमस्ते मनस्ताप दुस्तर चन्द्रस्तम
7. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और बाद में 'क/ख/प/फ' वर्ण हो तो विसर्ग मूर्धन्य 'ष्' में बदल जाता है।	**विसर्ग → ष्**	आविः + कार परि: + कृत चतुः + पाद नि: + कपट दु: + प्रकृति दुः + कर्म दुः + कर दु: + परिणाम निः + प्राण निः + फल निः + काम नि: + पाप	आविष्कार परिष्कृत चतुष्पाद निष्कपट दुष्प्रकृति दुष्कर्म दुष्कर दुष्परिणाम निष्प्राण निष्फल निष्काम निष्पाप
8. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'क/ख' अथवा' प/फ' हो तो विसर्ग 'स्' में बदल जाता है	**विसर्ग → स्**	पुरः + कार नम: + कार श्रेयः + कर तिर: + कार भा: + कर	पुरस्कार नमस्कार श्रेयस्कर तिरस्कार भास्कर
9. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और बाद में 'र्' हो तो विसर्ग से पहले के 'इ' या 'उ' स्वर क्रमशः 'ई' या 'ऊ' में बदल जाते है	**दिर्घीकरण**	निः + रव नि: + रस निः + रोग नि:+ रज	नीरव नीरस नीरोग नीरज

10. विसर्ग + ट/ठ = विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन	**विसर्ग → ष्**	धनुः + टंकार	धनुष्टंकार
11. विसर्ग + त/थ = विसर्ग का 'स्' में परिवर्तन	**विसर्ग → स्**	नि:+ तार निः + तेज इतः + ततः	निस्तार निस्तेज इतस्ततः
12. विसर्ग + श/स = विसर्ग का क्रमशः 'श'/'स्' में परिवर्तन	**विसर्ग → श/स्**	निः + सन्देह दुः + शासन दुः + साहस	निस्सन्देह दुश्शासन दुस्साहस
13. यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और बाद में 'क/ख' या 'प/फ' हो तो विसर्ग सुरक्षित रहता है	**विसर्ग → :**	मन: + कामना अन्तः + करण प्रातः + काल पुनः + प्राप्ति	मन:कामना अन्तःकरण प्रातःकाल पुनःप्राप्ति

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER समास

- **समास** का अर्थ है **संक्षिप्त करना या संक्षेपण** ।
- जब भी दो सार्थक पदों का मेल या संयोग होता है, तब योजक चिह्नों या विभक्तियों के लोप होने के कारण उस शब्द का संक्षिप्तीकरण हो जाता है,यही प्रक्रिया **समास** कहलाती है।

  उदाहरण : पूजा के लिए घर → संक्षिप्तीकरण → पूजाघर।
- इस प्रकार दो सार्थक शब्दों के मेल से या विभक्ति चिह्नों के लोप के कारण बनने वाले नवीन शब्दों को **सामासिक या समस्त पद** कहते है।
- इसके मुख्यतः **दो पद** होते है- पहले पद को **'पूर्व पद'** एवं बाद वाले पद को **'उत्तरपद'** कहते है।

  उदाहरण के लिए - पूजाघर में **'पूजा'** पूर्वपद एवं **'घर'** उत्तरपद को अभिव्यक्त करता है।
- सामासिक पदों को अपने विभक्ति चिह्नों या योजक चिह्नों के साथ लिखने की प्रक्रिया **समास-विग्रह** कहलाती है।

  उदाहरण के लिए - पूजाघर का समास-विग्रह 'पूजा के लिए घर' है।

अव्ययीभाव समास

- इस समास में प्रायः **पहला पद प्रधान** होता है और **समस्त पद अव्यय** की भांति काम करता है।
- इसके कुछ **पहचान सूचक** शब्द इस प्रकार है- आ, अनु, प्रति, यावत, हर, भर, उप, यथा आदि।
- **नोट:** जिस सामासिक पद में किसी शब्द की पुनरावृत्ति होती हो तो वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है जैसे दिनोंदिन, पल-पल आदि।

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
सादर	आदर सहित	भरपेट	पेट भरकर
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	यथाविधि	विधि के अनुसार
अनुस्मारक	स्मरण करने के लिए	यावज्जीवन	जीवन भर
यथासाध्य	जितना साधा जा सके	कुशासन	कुश पर आसन
बेशक	शक के बिना	रातोंरात	रात ही रात में
मृत्युपर्यंत	मृत्यु तक	पुश्तानुपुश्त	पुश्त दर पुश्त
भरसक	अपनी शक्ति भर	बेखटके	बिना खटके
परोक्ष	इन्द्रियों के सामने न होकर परे	यथासमय	समय के अनुसार
बराबर	बराबरी के साथ	हाथोंहाथ	तुरंत / हाथ पर हाथ
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	आजन्म	जन्म से लेकर

प्रत्येक	हर एक	यथामति	मति (बुद्धि) के अनुसार
बेमिसाल	जिसकी मिसाल न हो	निर्भय	बिना भय के
अभूतपूर्व	जो पूर्व में नहीं हुआ है	यथासंभव	जहाँ तक संभव हो सके
अनुकूल	मन के अनुसार	यथेष्ट	यथा इष्ट
बेखबर	बिना खबर के	आमरण	मृत्यु पर्यंत
सम्मुख	मुख के सामने	विवाहोपरान्त	विवाह के उपरान्त
आजीवन	जीवन भर	हररोज़	प्रत्येक दिन
धड़ाधड़	धड़ धड़ की आवाज़ के साथ	पुर्वरात्र	पूर्व रात्रि
यथेच्छा	इच्छा के अनुसार	प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
यथानियम	नियम के अनुसार	निधड़क	बिना धड़क के
पल पल	हर पल	बखूबी	खूबी के साथ
सजात	सह जाति वाला	निर्लज्ज	लज्जा से रहित
अनजाने	बिना जाने हुए	निरामिष	आमिष से रहित
नीरव	रव रहित	प्रत्याशा	आशा के बदले घात
अनुगुण	गुण के योग्य	अत्यावश्यक	आवश्यकता से अधिक
अत्याचार	आचार का अतिक्रमण	आकाशपतित	आकाश से पतित

<u>तत्पुरुष समास</u>

- जिस समास में **पहला पद गौण** एवं **दूसरा पद प्रधान** होता है, वह **तत्पुरुष समास** कहलाता है। इसमें **कर्ता** एवं **संबोधन कारक को** छोड़कर अन्य सभी कारकों के **विभक्ति चिह्नों** का लोप हो जाता है और इसी को आधार बनाकर इसे आगे **6 प्रकारों** में बाँटा गया है -

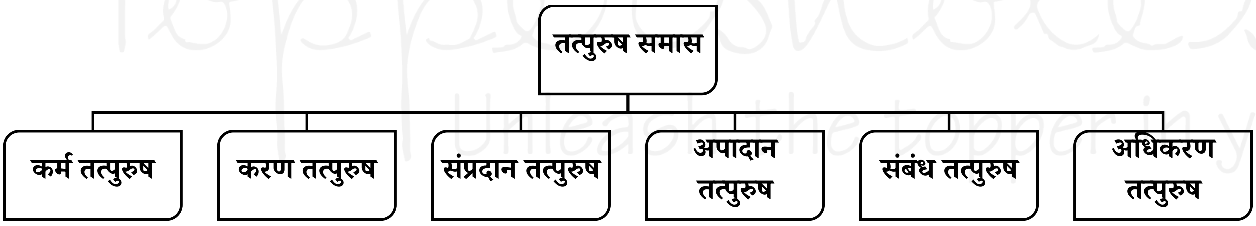

समास का नाम	विभक्ति चिह्न का लोप	उदाहरण (समस्त पद = विग्रह)
कर्म तत्पुरुष	**'को'**	➢ ग्रामगत = ग्राम को आगत ➢ गृहागत = घर को आगत ➢ अधिकारप्राप्त = अधिकार को प्राप्त ➢ ख्यातिप्राप्त = ख्याति को प्राप्त ➢ शरणागत = शरण को आगत ➢ चिड़ीमार = चिड़ियों को मारने वाला ➢ जल पिपासु = जल को पीने की इच्छा रखने वाला ➢ मोक्षप्राप्त = मोक्ष को प्राप्त ➢ स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त ➢ गगनचुम्बी = गगन को चूमने वाला

Toppersnotes Unleash the topper in you

		➢ कनकटा = कान को कटवाया हुआ ➢ गिरहकट = गिरह को काटने वाला ➢ जलधि = जल को धारण किया हुआ ➢ जेबकतरा = जेब को काटने वाला ➢ शिल्पकार = शिल्प को बनाने वाला ➢ पॉकेटमार = पॉकेट को मारने वाला ➢ मनोहर = मन को हरने वाला ➢ रथचालक = रथ को चलाने वाला ➢ वनगमन = वन को गमन ➢ कृष्णार्पण = कृष्ण को अर्पण ➢ तमदाता = तम को देने वाला ➢ पतितपावन = पापियों को पवित्र करने वाला ➢ यशप्राप्त = यश को प्राप्त
करण तत्पुरुष	**'से' ('द्वारा' का भी प्रयोग होता है)**	➢ भावपूर्ण = भाव से पूर्ण ➢ बाणाहत = बाण से आहत ➢ हस्तलिखित = हस्त से लिखित ➢ तुलसीकृत = तुलसी के द्वारा कृत ➢ ईश्वरदत्त = ईश्वर द्वारा दिया हुआ ➢ गुणभरा = गुणों से भरा ➢ बिहारीरचित = बिहारी के द्वारा रचित ➢ अकालपीड़ित = अकाल से पीड़ित ➢ नीतियुक्त = नीति से युक्त ➢ लताच्छादित = लता से आच्छादित ➢ आनन्दमय = आनंद से युक्त ➢ जन्मजात = जन्म से जुड़ा हुआ ➢ ज्ञानयुक्त = ज्ञान से युक्त ➢ पर्णकुटी = पर्ण से बनी कुटी ➢ बैलगाड़ी = बैल से चलने वाला गाड़ी ➢ पनचक्की = पानी से चलने वाली चक्की ➢ भयाकुल = भय से आकुल ➢ मनगढ़ंत = मन से गढ़ा ➢ मनमाना = मन से माना ➢ रेखांकित = रेखा से अंकित ➢ रोग ग्रस्त = रोग से ग्रस्त ➢ हिमाच्छादित = हिम से अच्छादित ➢ जन्मरोगी = जन्म से रोगी ➢ पदाक्रांत = पद से आक्रांत ➢ दूरागत = दूर से आगत ➢ कष्टसाध्य = कष्ट से साध्य

Toppers Notes Unleash the topper in you

		➢ पंत प्रणीत = पंत द्वारा प्रणीत ➢ रसभरा = रस से भरा ➢ धनहीन = धन से हीन ➢ वज्राहत = वज्र से आहत ➢ मदमाता = मद से माता ➢ गुणयुक्त = गुण से युक्त ➢ घृतान्न = घृत से युक्त अन्न ➢ हथकरघा = हाथों से चलने वाला करघा
संप्रदान तत्पुरुष	**'के लिए'**	➢ गौशाला = गाय के लिए शाला ➢ देशभक्ति = देश के लिए भक्ति ➢ सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह ➢ पशुबलि = पशु के लिए बलि ➢ गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा ➢ देशार्पण = देश के लिए अर्पण ➢ युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि ➢ पाठशाला = पाठ के लिए शाला ➢ प्रयोगशाला = प्रयोग के लिए शाला ➢ मालगाड़ी = माल के लिए गाड़ी ➢ रसोईघर = रसोई के लिए घर ➢ स्नानगृह = स्नान के लिए गृह ➢ राहखर्च = राह के लिए खर्च ➢ रेलभाड़ा = रेल के लिए भाड़ा (किराया) ➢ क्रीड़ाक्षेत्र = क्रीड़ा के लिए क्षेत्र ➢ सभामण्डप = सभा के लिए मण्डप ➢ प्रेमातुर = प्रेम के लिए आतुर ➢ छायातरू = छाया के लिए तरु ➢ यज्ञशाला = यज्ञ के लिए शाला ➢ मातृभक्ति = माता के लिए भक्ति ➢ विद्यालय = विद्या के लिए आलय ➢ बलिपशु - बलि के लिए पशु ➢ सत्यव्रत = सत्य के लिए व्रत ➢ समाचार पत्र = समाचार के लिए पत्र
अपादान तत्पुरुष	**'से' (पृथक / अलग)**	➢ जन्मान्ध = जन्म से अंधा ➢ ऋणमुक्त = ऋण से मुक्त ➢ गुणहीन = गुण से हीन ➢ देशनिकाला = देश से निकाला ➢ पथभ्रष्ट = पथ (रास्ते) से भ्रष्ट ➢ कर्मविमुख = कर्म से विमुख ➢ कामचोर = काम से जी चुराने वाला

		➢ धर्मभ्रष्ट = वह जो धर्म से पतित हो गया हो ➢ जलहीन = जल से हीन ➢ जीवनमुक्त = जीवन से मुक्त ➢ कर्महीन = कर्म से हीन ➢ पापमुक्त = पाप से मुक्त ➢ बुद्धिहीन = बुद्धि से हीन ➢ लक्ष्य भ्रष्ट = लक्ष्य से भ्रष्ट ➢ सेवानिवृत्त - सेवा से निवृत्त ➢ राजद्रोह = राज से द्रोह ➢ लोकोत्तर = लोक से उत्तर ➢ अकालपीड़ित = अकाल से पीड़ित
संबंध तत्पुरुष	**'का/के/की'**	➢ रेलगाड़ी = रेल की गाड़ी ➢ वाचस्पति = वाच का पति ➢ राजमहल = राजा का महल ➢ राजपुत्र = राजा का पुत्र ➢ विद्याभंडार = विद्या का भंडार ➢ देशांतर = देशो का अंतर ➢ रामानुज = राम का अनुज ➢ आनंदाश्रम = आनंद का आश्रम ➢ घुड़दौड़ = घोड़ों की दौड़ ➢ परीक्षाभवन = परीक्षा का भवन ➢ राजकुमार = राजा का कुमार ➢ नगरवासी = नगर का वासी ➢ राष्ट्रपिता = राष्ट्र के पिता ➢ मालगोदाम = माल का गोदाम ➢ प्रेमोपासक = प्रेम का उपासक ➢ राजदरबार = राजा का दरबार ➢ राजसभा = राजा की सभा ➢ रामकहानी = राम की कहानी ➢ जिलाधीश = जिले का अधीश ➢ रामचरित = राम का चरित ➢ हथकड़ी = हाथ की कड़ी ➢ भारतरत्न = भारत का रत्न ➢ युद्धक्षेत्र = युद्ध का क्षेत्र ➢ शपथपत्र = शपथ का पत्र ➢ गंगाजल = गंगा का जल ➢ मधुमक्खी = मधु की मक्खी ➢ दूरदर्शन = दूर का दर्शन ➢ गृहस्वामी = गृह का स्वामी ➢ हिमालय = हिम का आलय

अधिकरण तत्पुरुष	**'में/पर'**	➢ जलमग्न = जल में मग्न ➢ आपबीती = आप पर बीती ➢ हरफनमौला = हर फन में मौला ➢ विद्याप्रवीण = विद्या में प्रवीण ➢ कर्तव्य परायणता = कर्तव्य में परायण ➢ नटवर = नटों में श्रेष्ठ ➢ आत्मविश्वास = अपने पर विश्वास ➢ देशाटन = देश में अटन (भ्रमण) ➢ गृहप्रवेश = गृह में प्रवेश ➢ आनन्दमग्न = आनन्द में मग्न ➢ ऊंटपटांग = ऊट पर टांग अर्थात बेतुका ➢ सर्वव्याप्त = सभी में व्याप्त ➢ ध्यानमग्न = ध्यान में मग्न ➢ गृहस्थ = गृह में स्थित ➢ वनवासी = वन में वास करने वाला ➢ वाग्वीर = वाक् (वाणी) में वीर ➢ धर्मवीर = धर्म में वीर ➢ जीवदया = जीवों पर दया ➢ इन्द्रयजय = इंद्रियों पर जय ➢ आनंदमग्न = आनंद में मग्न ➢ घुड़सवार = घोड़े पर सवार ➢ भुजग = भूमि में जन्म लेने वाला

कर्मधारय समास :

- इस समास के **पहले तथा दूसरे पद में विशेषण, विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय** का संबंध होता है तथा इसका भी **उत्तरपद प्रधान** होता है।
- इसके अंतर्गत समास-विग्रह में **विशेषण या विशेष्य की स्थिति** में **'है जो'** शब्द आता है, तो वहीं **उपमान-उपमेय की स्थिति** में **'के समान'** शब्द का प्रयोग होता है जिससे इसकी पहचान करना आसान हो जाता है।

उदाहरण के लिए–

➢ चरणकमल - कमल के समान चरण ➢ पीताम्बर - पीला वस्त्र ➢ चन्द्रमुख - चन्द्र जैसा मुख ➢ देहलता - लता जैसी देह ➢ प्रधानमंत्री - प्रधान है जो मंत्री ➢ महात्मा - महान है जो आत्मा ➢ नीलकमल - नीला है कमल जो	➢ सद्धर्म - सत् है जो धर्म ➢ परमेश्वर - परम है जो ईश्वर ➢ कमलनयन - कमल के समान नयन ➢ मुखचंद्र - चन्द्र के समान मुख ➢ करकमल - कमल के समान कर (हाथ) ➢ मृगनयन - मृग रूपी नयन ➢ कुपुत्र - कुत्सित है जो पुत्र	➢ पीतसागर - पीला है जो सागर ➢ श्वेतकमल - श्वेत है जो कमल ➢ परमानन्द - परम है जो आनंद ➢ पुरुषोत्तम – पुरुषों में है जो उत्तम ➢ नीलगाय - नीली है जो गाय ➢ नीलगगन - नीला है जो गगन ➢ नरसिंह - नरों में सिंह के समान ➢ सुन्दरलाल - सुंदर है जो लाल